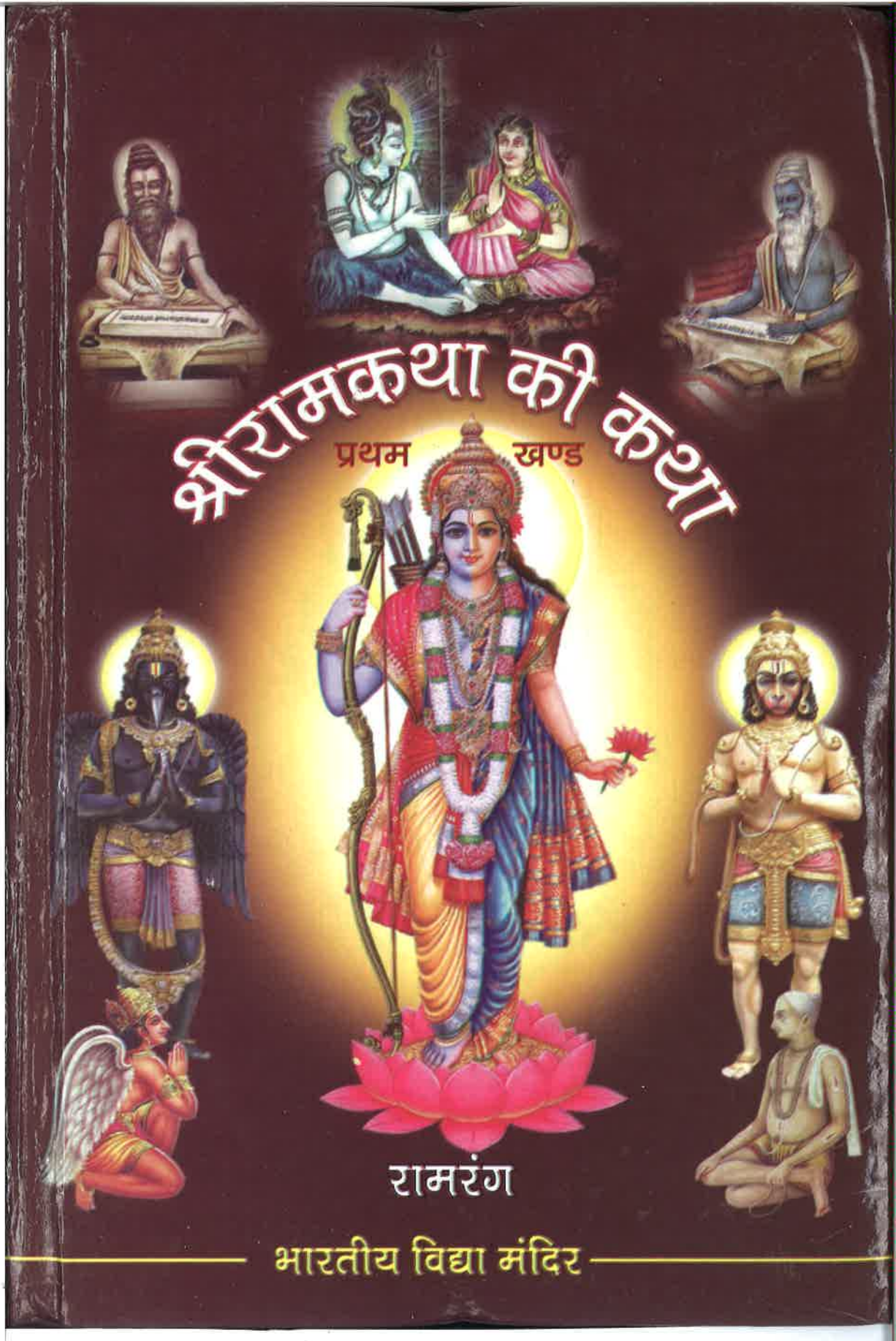

श्रीरामकथा की कथा

प्रथम खण्ड

रामरंग

भारतीय विद्या मंदिर

नमन अभिनमन—

श्रीराम कथा की कथा अपने ही नायक की अनुकम्पा से प्रकाशनाधीन स्थिति से उभरने जा रही है। इसका समारम्भ कब हुआ—यह तो मैं नहीं जानता किंतु किनकी प्रेरणा से हुआ—तो एक ही नाम—राम...श्रीराम...मेरे प्रभु वे ही अनंतकोटि ब्रह्मांडनायक श्रीराम जिन्होंने धूलि-धूसरित शिशु को उठाकर कनकभवन की स्वामिनी जगदंबा जानकी को थमा दिया। उन्होंने भी प्यार से-दुलार से ही नहीं अपितु किसी अंग में एक क्षुद्र से छाले की छाँव उभरती देखकर शल्य क्रिया कराने में भी पल भर का विलंब न करते हुए—कैसे-कैसे पालन-पोषण-संपोषण किया उसका तो क्या वर्णन किया जाए? जिसे उनके प्राणेश्वर ने अपनी अहैतुकिकृपा के प्रकाशन हेतु अपना निमित्त मनोनीत किया, यह उन अन्नपूर्णा के अमृताधिक प्रसाद का ही प्रभाव है। चलने में अष्टावक्र जैसे को अपनी रसोई से थाल के थाल भर-भरकर किसी न किसी के द्वारा नित्य भेज रही हैं। साथ ही एक आसंदी पर आसीन कर रामेश्वर भी (राम जिसके ईश्वर) बना ही रखा है।

गिरिराज गोवर्धन यद्यपि उठते तो गोविंद की छगुनी पर ही हैं किंतु अपनी आत्मीयता के कारण जिन ग्वाल-बालों के वे सर्वस्व बने—वे भी अपनी ऋष्टिएँ गिरितल में अनामंत्रित की स्थिति में स्वयमेव लगाकर खड़े हो गए। वे गिरिधारी के सुस्नेहपूरित श्रद्धाविग्रह उनके समान नहीं—तो भी उनसे कम सम्मानित तो नहीं कहे जा सकते। इसी प्रकार इस श्रीहरि-निर्मित निमित्त की साधना को सहज बनाने में, जो समय-समय पर प्रकार-प्रकार से साधन बने हैं, उनके प्रति अभिनमन के रूप में कृतज्ञता ज्ञापित करना तो निश्चित् रूप से मेरा धर्म है। अभिव्यक्ति की पूर्ति हेतु शब्दसागर में शब्दावली तो हैं किन्तु वे त्रिविक्रम के समक्ष वामन ही लगती हैं। फिर भी यदि संक्षेप में उन विभूतियों के नामों का भी उल्लेख न करूँ तो यह प्रायश्चित्विहीन पातक के समान कृतघ्नता ही मानी जाएगी।

क्या कहूँ—उन परम श्रद्धेय स्वामी सत्यमित्रानंद जी गिरि महाराज के प्रति जिन्होंने देश-देश में धर्म जागरण हेतु धर्मदंड—शंकराचार्य जैसे महनीय पद को भी विघ्न मानकर, परित्याग कर दिया। उन भारतमाता मंदिर के संस्थापक यतिश्रेष्ठ ने देश-विदेश के जन-जन के अंतर में भारतीयता के मंदिरों की संस्थापना करते हुए विश्व को प्रामाणिकता से बता दिया कि स्वामी विवेकानंद की धरती अभी वंध्या नहीं हुई है।

इसी कोटि में उदासीन-कार्ष्णिपीठाधिपति रमणरेती महावन गोकुल के अधिष्ठाता अनंतश्री स्वामी गुरुशरणानंद जी महाराज तो परमोदार

वात्सल्य की प्रत्यक्ष प्रतिमूर्ति ही हैं। कठिन से कठिन समस्या के सहज समाधान—देश-देश में धर्मयात्राओं के यशस्वी आयोजक-संचालक ही नहीं, वे ऐसे लोकातीत प्रेरक भी हैं—जिनके दर्शनीय सुसंग-शृंग से प्रवाहित श्रीहरि नाम की पतितपावनी गंगा द्वार-द्वार की परिक्रमा करती हुई—कितने ही अन्तरों को रँगती हुई, अंतरंग बनाती हुई, देवागार का स्वरूप प्रदान करती हुई चली जा रही है।

इनके अतिरिक्त जूना पीठाधिपति महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद जी गिरि—श्रीमणिराम छावनी अयोध्या के महन्तश्री नृत्यगोपालदास जी—श्रीअग्रपीठाधीश्वर रैवासा धाम (सीकर—राज.) के डॉ. राघवाचार्य जी वेदान्ती—श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा दिल्ली के परमाध्यक्ष स्वामी राघवानंद जी प्रभृति सन्तों के समय-समय पर सुस्नेहसिक्त जो आशीर्वाद प्राप्त हुए—यह कृति उसी की फलश्रुति है।

जिनका उल्लेख प्रारंभ में ही करना चाहिए था वे तो सरलता की मंजुलमूर्ति संतप्रवर श्री मोरारी बापू ही हैं। मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया है कि वे जहाँ भी विराजमान हो जाते हैं—वहाँ श्रीराम प्रेम की मंदाकिनी दिशा-दिशा से गंगा-यमुना-सरयू-कृष्णा-कावेरी आदि को आकर्षित करती हुई कल्लोलिनी छवि में किल्लोल करती हुई प्रत्यक्षतः प्रतीत होने लगती है। शाश्वत् संस्कृति आधुनिक विकृतियों को अपने अंक में समाविष्ट कर, एक अद्भुत् वातावरण की सृष्टि क्षणों में कर डालती है। कनरसियों को रामरसिया बनाने की उनकी अद्भुत् क्षमता है। वोल्गा-अमेज़ान-दज़ला-फ़रात-टेम्ज़ आदि भी आपके वाणी प्रवाह के प्रभाव से गंगा-गोदावरी बनकर नृत्य करने को बाध्य हो जाती हैं। मेरे ध्यान में बापू देश के ऐसे प्रथम संत हैं जो श्रीराम कार्य में संलग्न संतों-व्यासों-साहित्यकारों को चुन-चुनकर सादर आमंत्रित करते हैं, पुरस्कृत करते हैं। इन्होंने ही विस्मृतप्राय दिवंगत कथाव्यासों के वंशजों को खोज-खोजकर सम्मानित किया है। सद्साहित्य के रचनाकार अनुसंधानकर्ताओं के लिए तो वे कल्पतरु ही हैं।

इन परमवंदनीय विभूतियों के प्रति नमन-अभिनमन—

जहाँ तक प्रस्तुत कृति श्रीराम कथा की कथा का संबंध है तो इस क्रम में प्रथम नाम स्वाभाविक रूप से प्रकाशन व्यवस्था के प्रमुख श्रीमंत बिट्ठलदास जी मूँधड़ा का ही है। ये समादरणीय उस सघन अमराई के वे रसाल तरुवर हैं, जिसका बीजारोपण अपने समान प्रकृति-प्रवृत्ति के स्वामी महानुभावों के साथ मिलकर आपके पितामहश्री गोलोकवासी श्रीमंत गिरिधरदास जी मूँधड़ा ने बीकानेर-राजस्थान में किया। सन् १९४७ में भारत विभाजन की भयावही विभीषिका से त्रस्त समस्त प्रकार से साधनहीन—धर्माधीन विशाल समूहों ने जैसे-तैसे प्राण बचाकर नितांत निःसहाय अवस्था में—शरणार्थी के

रूप में भारत के अनेक भागों की भाँति बीकानेर में भी बड़ी संख्या में प्रवेश किया। उनके लिए अन्नसत्रों-उपचारगृहों-अस्पतालों का निर्माण कराया। उनके बालकों की शिक्षा में व्याघात न आ जाए, यह विचारकर गुरुकुल पद्धति से रात्रि कक्षाओं-विद्यालयों-कन्या पाठशालाओं का प्रबन्ध किया-कराया।

इसी प्रकार इन दूरदर्शी महात्मन् ने राष्ट्र को धर्म-दर्शन-विज्ञान-साहित्य -लोकसाहित्य-इतिहास-पुरातत्व-कला-लोककला की दृष्टि से देश की समृद्धि की वृद्धि हेतु भारतीय विद्या मंदिर की स्थापना के साथ-साथ वैचारिकी पत्रिका का भी समारंभ कराया।

उनके पश्चात् उन्हीं के सुपथ का अनुसरण करते हुए उनके यशस्वी सुपुत्र स्मृतिशेष श्रीमंत माधोदास जी मूँधड़ा ने भी अनेक कृतियों की रचना करते हुए, समानधर्मी सहयोगियों को साथ लेकर कोलकाता में भारतीय संस्कृति संसद् की स्थापना कर क्षेत्र-क्षेत्र की प्रख्यात् विभूतियों से जन-जन को परिचित कराने के लिए एक मंच का प्रावधान किया। अपने पूर्वजों के कीर्तनीय क्रियाकलापों की उत्तरोत्तर वृद्धि श्रीमंत बिट्ठलदास जी मूँधड़ा जिस निरालस्य भाव से कर रहे हैं—उसका उल्लेख करना सहज नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार-उद्योग आदि का निरंतर विस्तार करते हुए भारतीयता को लोकोपकारी प्रकाशनों से समृद्ध करते हुए, भारतीय संस्कृति संसद् के अध्यक्ष पद का निर्वाह भी पिछले अनेक वर्षों से करते चले आ रहे हैं। देश-विदेश की अनेकानेक प्रतिष्ठित उपाधियों से विभूषित इन महानुभाव को यदि समाज का एक श्लाघनीय शलाका पुरुष कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी। कार्य संचालन की दृष्टि से प्रभूत मात्रा में सहयोगियों के होते हुए भी प्रमुखरूपेण श्रीमान शंकरलाल जी सोमानी एवं डॉ. बाबूलाल जी शर्मा का उल्लेख करना समीचीन ही होगा।

जिन्होंने मेरे आद्याचार्य ठाकुर श्रीमद्रामकृष्ण परहंसदेव की सुपद रज संस्पर्शिता कोलकाता की मंदारमालिका मंडिता महियसी मही से मुझे परिचित कराया—उन श्रीमंत परमानंद जी चूड़ीवाल की पुण्यस्मृति को श्रद्धासुमन समर्पित करते हुए—उनके प्रथम दर्शन से कृतार्थ कराने वाले श्रेष्ठिवर लक्ष्मीनिवास जी झुनझुनवाला एवं उनके सम्पर्कसूत्र को कौशेयी दामनी के प्रगाढ़ बंधक-बाधा निर्बाधक में कसने वाले सुस्नेहास्पद श्रीमंत अरुण कुमार जी चूड़ीवाल को इस अवसर पर कदापि विस्मृत नहीं किया जा सकता।

इसी शृंखला में परम वैष्णव श्री विष्णुहरि जी डालमिया—जन-जन में चेतना की चैतन्य दीपमालिका की जागृति के सूत्रधार काषायीमानस श्रीमंत अशोक जी सिंघल—सर्वोच्च न्यायालय के निवर्तमान प्रधान न्यायाधीश श्रीमंत रमेशचन्द्र जी लाहोटी—पद्मविभूषण श्री त्रिलोकीनाथ जी चतुर्वेदी—अखिल

भारतीय साहित्य परिषद् के वर्तमान एवं निवर्तमान अध्यक्ष युगल श्री त्रिभुवननाथ जी शुक्ल (भोपाल) एवं डॉ. बलवंतराय जी जानी (राजकोट)–विभिन्न उपनिषदों के काव्यानुवादकर्ता श्रीरामदासानुदास अनुजवर आचार्य यादकुमार –कल्याण के यशस्वी संपादक श्री राधेश्याम जी खेमका–बौद्ध जनों को उनके मूल की ओर उन्मुखकर्ता श्रीमंत भूपेन्द्रकुमार जी मोदी–वनबंधु परिषद् के ध्वज तले देश की एकता-अखंडता को प्रबल करने में सतत् संलग्न श्रीमंत राजेन्द्रप्रसाद जी खेतान–श्रीराम रसरसिक श्रीमंत ओमप्रकाश जी सिंघल–कुमार सभा (कोलकाता) के माध्यम से सद्साहित्यकारों को समादृत करने में अग्रणी श्री जुगलकिशोर जी जयथलिया–संस्कार भारती के आश्रय से सद्संस्कृति के लताकुंजों के माल्यकार श्री विमल जी लाट आदि के अतिरिक्त दिल्ली हिन्दी सा.स. के अध्यक्ष पूर्व महापौर श्रीमान महेशचन्द जी शर्मा–इन्द्रप्रस्थ भारती के अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र जी आर्य–दिल्ली हिन्दी अकादमी के पूर्व सचिव मान. डॉ. रामशरण जी गौड़–पांचवाँ स्तम्भ पत्रिका की संस्थापिका–वर्तमान में गोआ प्रदेश की महामहिम राज्यपाल देवी मृदुला जी सिन्हा–पर्वतीय क्षेत्रों में हिन्दी की ध्वजवाहिका डा. रीता सिंह जी (कुल्लू)–प्रख्यात् कवयित्री श्रीमती इन्दिरामोहन जी–कालिंदी वि.वि. की पूर्व प्राचार्या डॉ. मालती जी–सत्यवती वि.वि. की आचार्या–केन्द्रीय शब्दकोश निर्माण समिति की सदस्या डॉ. कमला कौशिक जी–मानवीय संवेदनाओं की चित्रकार श्रीमती मोहिनी वाजपेयी–साहित्य की विविध विधाओं में पारंगत श्रीमती रेखा रोहतगी–अनेक कृतियों की रचनाकार प्रख्यात् शिक्षाशास्त्री रजनी सिंह जी (डिबाई)–विचारप्रधान साहित्य की परमोपासक श्रीमती डॉ. सन्तोषशेखर जी के अतिरिक्त–

संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीयता के संदेशवाहक हिन्दी तथा अंग्रेजी में अनेक कृतियों के रचयिता प्रेक्षावान् डॉ. सत्यप्रकाश जी अग्रवाल एवं उनकी विदुषी सहधर्मिणी डॉ. उर्मिला जी अग्रवाल–वेल्स के संचालक डॉ. भूदेव जी शर्मा (लूसियाना)–पाश्चात्य जगत् में निरंतर प्रवास करते हुए गीता-रामायण आदि के सरस प्रवचनकार डॉ. ब्रह्मदेव जी–वैदिक संहिता-उपनिषदों-अष्टावक्र गीता आदि की अनुवादिका कवयित्री डॉ. मृदुलकीर्ति जी गर्ग (मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया)–प्रा. कृष्ण कुमार जी (बर्मिंघम)–डॉ. सुमीता चक्रवर्ती ब्रूम्स (त्रिनिडाड) आदि से समय-समय पर यत्र-तत्र सार्थक संवाद हुए। अब भी यदा-कदा होते रहते हैं। इन सभी के प्रति नमन-अभिनमन।

श्रीराम धर्मार्थ न्यास से संबंधित श्री गोपालकृष्ण अरोड़ा सांस्कृतिक मंच की कर्णधार औदार्य की प्रतिमूर्ति देवी शशि-गोपालकृष्ण जी अरोड़ा तो उस कुलीन परंपरा की नियामक हैं जिसका समारंभ इनके दादा-श्वसुरश्री सुप्रसिद्ध श्रीकल्कि भक्त गोपालक श्रीयुत् श्रीराम जी अरोड़ा जिन्होंने दिल्ली

रामलीला की प्रथम शोभायात्रा को अपने घनिष्ठ सहयोगियों के साथ मिलकर श्रीरामरथयात्रा का राष्ट्रीय स्वरूप सन् १६१४ में प्रदान किया। उनके पश्चात् उनके सुपुत्र श्री राधाकृष्ण जी अरोड़ा ने उस स्वरूप को उत्तरोत्तर सांगठनिक सौंदर्य प्रदान किया। अपने पूर्वजों के पथ का अनुसरण करते हुए स्व. श्री गोपालकृष्ण जी अरोड़ा ने अयोध्या–मिथिलादि की श्रीराम विवाह की परिपाटी को पुनर्जन्म देकर राजधानी को धर्मधानी ही बना दिया। स्वयं प्रख्यात् कवि होते हुए भी अन्य अनेक कवियों को एक मंच प्रदान किया। चिकित्सा क्षेत्र में अध्ययनरत छात्रों के प्रयोगार्थ उन देहदानकर्ता के दिवंगत होने पर उनकी सहधर्मिणी देवी शशि जी अरोड़ा उनकी प्रस्थापित परंपरा का पूर्ण मनोयोग से पालन कर रही हैं। इस यशस्वी कार्य में इनकी सुपुत्रिएँ सर्व सौभाग्यवती आरती-विकास अरोड़ा–दीप्ति-गिरीश कठपालिया एवं पूजा-ऋषि कथूरिया जिस प्रकार श्रद्धापूर्वक सहयोग प्रदान कर रही हैं–उसे सुताकृत श्राद्ध विधि का अनुकरणीय उद्धरण ही कहा जा सकता है।

प्रस्तुत कृति श्रीराम कथा की कथा के रचनाकाल से ही जिनका प्रकार-प्रकार से सहयोग प्राप्त होता रहा है वे रामगढ़ शेखावाटी (राज.) के बंधुवर श्री ओमप्रकाश जी-जगदीश प्रसाद जी जौहरी–श्रीमती शोभा-आलोक शांडिल्य–श्रीमती निशा-रमेश कपूर, सार्वभौम श्रीकल्कि महामंडल के महामंत्री श्रीमंत रामनारायण जी गोयल–उनके अनुज तथा प्रिय परिकरी–श्रेष्ठिवर श्री राधाकृष्ण जी कानोडिया के साथ-साथ जो दो तन एक मन से पूर्णतः सहयोगी रहे हैं वे हैं हिन्दी जगत के प्रत्येक कार्य में अग्रणी युगलबंधु श्री अरुण-हरि वर्मन–इन आत्मस्वरूप के विषय में क्या कहें। जिनके विषय में कुछ न कहकर सब कुछ कहा जा सकता है वे तो वत्सवर श्री नरेन्द्र मुद्गल ही हैं।

इस विस्तृत सूची को देखकर निश्चित् रूप से कई महानुभाव अन्यथा भी अनुभव करेंगे, मैं जानता हूँ। किंतु वे नहीं जानते कि सम्भवतः यह मेरे जीवन का अन्तिम कृतज्ञता प्रकाशन है। आयु का तो ७७वाँ वर्ष चल ही रहा है किंतु आपाद रोगों ने गो. तुलसीदास जी के श्रीहनुमान बाहुक शब्दों में 'पाँय पीर पेट पीर बाँह पीर मुँह पीर जर-जर सकल सरीर पीरमयी है' की स्थिति है। वैसे तो अन्य अनेक महानुभावों से ऋणमुक्त होने की कल्पना भी कल्पना से परे है किन्तु फिर भी संक्षेप में जो हो जाए–उतना तो हो ही जाना चाहिए। शेष वे जानें जिन्होंने कनकभवन की स्वामिनी को सम्हलाया और वे सम्हाल रही हैं।

–रामरंग